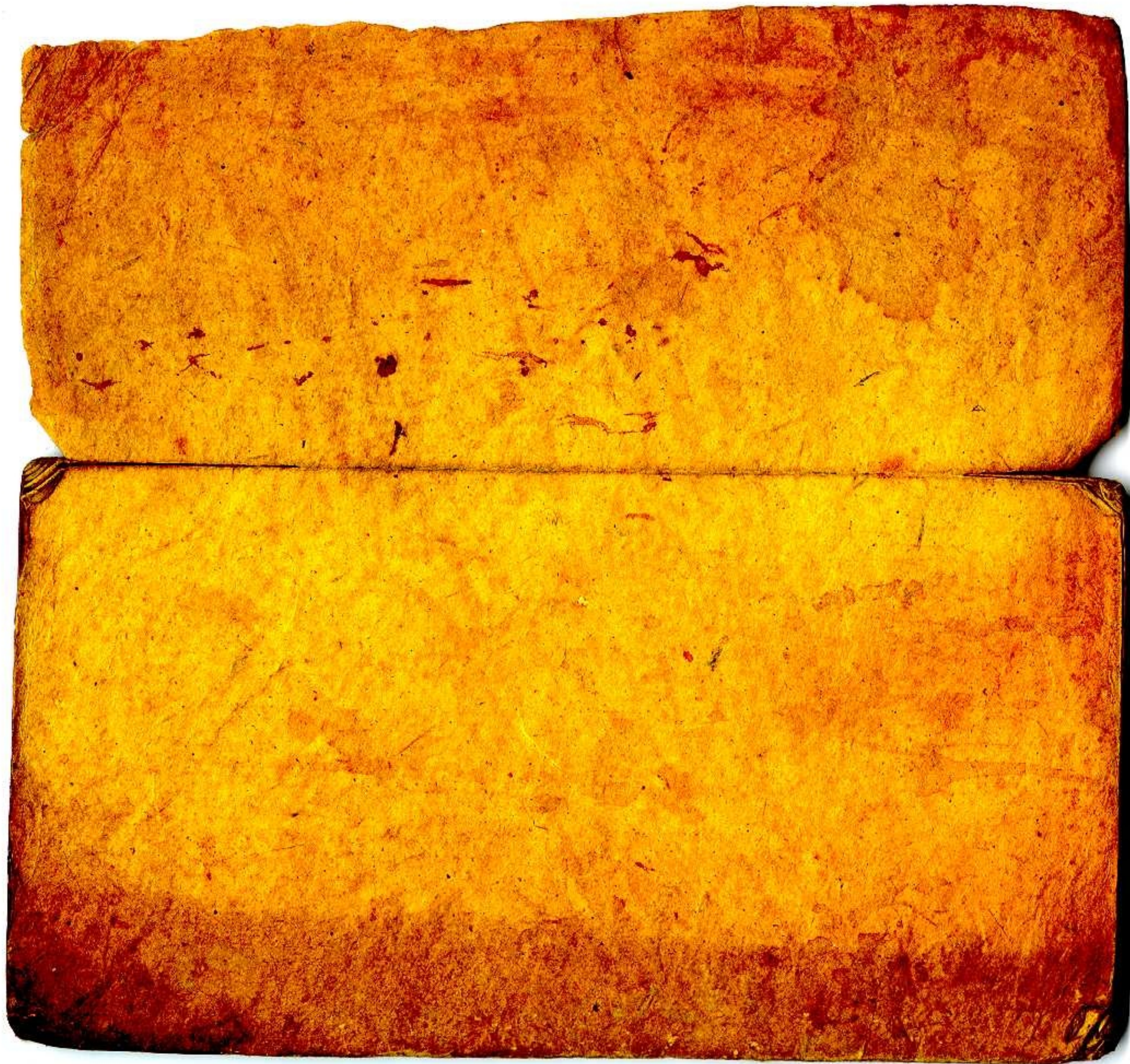


आर्य समाज

2178

I

ARJUNA ARCHIVES



(६) कालिक ध्यान नाव न महा कापालि त्वं विवर्द्धय दुःख संभाहिनी । (७) वि
धी कनाल वदन मदनान्मादिनी कालामालिनी शिवान्पि धीरु गवनी
अगच्छ २ मम सिद्धिं दाहि २ मी नक्ष २ कों कों कूं कूं कों कों कों कूं कूं कों
कूं कूं कूं कूं स्वाहा ॥ ध्य मनु सापाल वाचा ३ आवाहन याय ॥ मूल
त्रे कों कूं कों शिवाय ॥ हा गच्छ २ ॥ ह मिष्ट २ ॥ ह संनिदाहि
गारु वत् कूं अवर्णु ० २ रुद्र सैवक्ष २ वें धन्वा मृति कृत्य त्रयानि
मुदा प्रदक्षिण ॥ ॥ आगता ॥ व्यदक्ष रुद्र ली नागता ॥ व्यत्नक्ष रुद्र

त्रिनिवाद्यं ॥ मूलमनुदधालमूर्धार्य ॥ नैकीं धीं द्धुं द्धुं मूल
 त्रिवाये पाद्यं समर्पयामि नमः ॥ हस्तार्घ्यं स्वाहा ॥ अचमनियस्वध
 ॥ स्नानीयवषट् ॥ पंचामृत्स्नानीयद्रुं ॥ अलिस्नानीयवोषट् ॥ गं
 (ध)दकस्नानीयद्रुं ॥ वक्षुधपाद्यं नद्रुं ॥ चन्दनं नमः ॥ उष्ण
 तस्वाहा ॥ नक्तचन्दनवषट् ॥ सिद्धनायद्रुं ॥ सूकडूलनवोषट् ॥
 द्रुं श्रीं श्रीं अर्चकालनद्रुं ॥ ॥ धूपं नमः ॥ दीपं स्वाहा ॥ नैवेद्यव
 षट् ॥ रुलायद्रुं ॥ मूलायवोषट् ॥ गाम्बूलायद्रुं ॥ मूलनगर्पय

॥ पूनवाचमनीयकीं ॥ ॥ मूलनगयाञ्जलि ॥ मूलनवलि ॥ घण्ट
(गद्यपूजयन् ॥ ॥ अनह्नीदाहमदवी, पवित्रानार्घ्यधाय च ॥ मूल
मूर्तार्यसांगार्ये सपवित्रानार्ये ससखायै स्ववर्गार्ये पञ्चपथना
थै श्रीमद्विष्णुकायै शिवायै पादकां पूजयामि नमः ॥ तेन
तर्पयामि नमः ॥ ॥ ॐ श्रीं कूं कूं चल कूं जल कूं धन कूं सुख कूं पन
कूं रुच कूं कूं कूं कूं श्रीकालामिन्द्राय पादकां पूजयामि नमः ॥

॥ गंगा सिद्धाष्टक पूजनं ॥ १ श्री कल्याणनाथ कल्याणकि सहिताय पा
 पू ॥ १ रुद्रनाथ रुद्रवीरकि सहिताय पा पू ॥ १ गुरु सिद्धिनाथ न
 कल्याणकि सहिताय पा पू ॥ १ श्री जगतनाथ कल्याणकि सहिता
 य पा पू ॥ १ श्री वीरनाथ वीरध्वनीकि सहिताय पा पू ॥ १ श्री विष्णु
 मित्रनाथ यतनाथकि सहिताय पा पू ॥ १ श्री वशिष्ठनाथ अत्रं
 तीकि सहिताय पा पू ॥ १ विनाथ स्वकि सहिताय पा पू ॥ ॐ न
 सिद्धाष्टकं ॥ पूर्वादि विष्णुनाथ ॥ ॥ गंगा ११ भगवत पूजनं ॥ १ ॐ

यावह भगवताय पा पू ॥ पूर्व ॥ १ कालदत्त भगवताय पा पू ॥ दक्षि
 ण ॥ १ कालपास भगवताय पा पू ॥ पश्चिम ॥ १ लक्ष्मीवन भगवता
 य पा पू ॥ उत्तर ॥ १ धूम्राक्ष भगवताय पा पू ॥ अग्रे ॥ १ अरुण
 भगवताय पा पू ॥ नैऋत्य ॥ १ महामुनि भगवताय पा पू ॥ वा
 यव्य ॥ १ रुद्रनाथ भगवताय पा पू ॥ वीरनाथ ॥ १ पद्मवन भगव
 ताय पा पू ॥ नैऋत्य पश्चिम याम (क्षेत्र) ॥ १ रामक भगवता
 य पा पू ॥ ॐ भगवत पूर्व याम (क्षेत्र) ॥ ॐ नैऋत्य भगवताय पा पू ॥

मूलनयियाऽऽतिगुर्यदद्यात् ॥ ॐ अथादि अमक (अमामक
दवसर्मा मक कामनया मक दवगापीर्यर्थं नृपसामिषानेव
लिं ॐ प० प० पा० सां ग० म० सायु० म० सवाहनार्थे सपविवा
य० स्वसयार्थे स्ववर्गार्थे श्रीमद्विद्वत्कालिकायै ॐ दैविवाव
लिमहं कनिष्ठा ॥ ॥ वलिधियाडावान ॥ ॐ कीं दं दक्षिण
महाधननावायै रुगमालिन्यै गिवावपि (ध्वे) द्वाला मालि
न्यै ॐ मैवलिं प्रयच्छामि स्वाहा ॥ ॥ वलिविया ॥ ॐ कीं दं दक्षिण

काल्यै महाधननावायै रुगमालिन्यै गिवावपि (ध्वे) द्वाला मालि
न्यै ॐ मैवलिं प्रयच्छामि वलिं गृह्ण २ स्वादय २ ममसिद्धिं कुरु २
ममभाद्रनाभय २ मानय २ सूर्य २ उच्चागय २ हन २ विध्वंसय २
विदावय २ पव २ छिन्धि २ (अपय २ ग्राभय २ कुरुय २ माहय २
उन्मूलय २ रुस्मिं कुरु २ दूरय २ स्फोटय २ मथ २ विदावय २ ह
न २ विक्षारुय २ कुन २ सूर्य २ दम २ मर्दय २ पातय २ सर्वरु
तवर्षा कनि, सर्वजनममाहाविधी, सर्वभाद्रकुर्यं कनि, दाल २

पुद्गल २ गिवा रूपधन कालि महाकापालि कौं २ दूँ २ हौं नाथ
 मंदाह २ कुर २ चामू (छु) यम घृष्ट हिलि २ मम सर्वाही सु पून
 य २ सैहा विधा. सभाहि नी कुर कल किलि २ दूँ २ रुट स्वाहा॥
 ॐ गि वित्र चार्थ वलि मल्ल जगू॥ ॥ न्यास जप ॥ हूँ हूँ स्वाहा
 ॥ जप समर्थ ॥ भ्रातृयाय ॥ ॐ हूँ काली हूँ कनालि कां किं हूँ कूँ
 कालिकालि महाकालि गण मां गिवा रूपिनी पद्म रूपधनाद
 वीपनिवागाधेः सह ॐ हा ग कुर स्वाहा॥ थगि धून दाडा मल्ल स

मालकायाय ॥ धनी लिचक्रयाय मालका धून दाडा. कृपा देव वि
 सईन ॥ धनी लिगिवा विसईन याय ॥ धूगु वलि डाडाडा दंठा पि
 न, धर्म यथा धस गिवा वलि विल्ल डान ॥ विल्ल मल्ल वा. पानल वा.
 भ्रम न वा. पी ० सुवा. चतुर्थ १० वा. नदी तीर वा. नर स्कान
 वा. ऊध विविना वलि दद्यात् ॥ प्रवं सुखां चिदमनं सराजनं यत्नं
 हृषी निरव नग ॥ ततो नाया वं गृह मागय गध पूष्या शे देवी पू
 जयेत् ॥ तड कं कल नू जामनो नित्य भर्तृ तथ संध्या वंदनं पितृ

पूजनं तथेव कलशानां निरुपणं कुलपूजनं जपपूजाविधानानि
जलैर्वित्तु कृतानि च ॥ गृहितासापमादाय शिवाश्रमनि निरुपणं
॥ यकयारुर्यं नदवी शिवाया मनुष्यावति नये वसुधैव कुटुम्बकम्
पीतिपनम इत्युक्तं राजादिरुपमापन्नं दध्मं नमस्तु यादिकं
लक्षणानि कर्मानि विविक्त्यवलि माह्वत् ॥ नवैहिकत्वा महादवी
धमैस्वस्थयनैव यदि निष्ठा कलशममनो शिवावलि विधि ॥ ॥
ॐ धमनस्व (३) नलसा सिद्धि महासाह ॥ पूर्वभाग ॥ आह्वय ॥ द

किं विस्वामिहानि ॥ नेमस्य ध्यानदय ॥ पश्चिमं यागहीन ॥ वायुव
रागहीन ॥ उरुन पुनर्वीनद सिद्धि ॥ थनि नडायाल द्वाद ॥ ॥ ॐ
नमः शिवाय ॥ शिवाय पध्वनद वि कामकालिन भासुते ॥ उल्का मू
खिललजि क ध्यानराव मृगलिनी ॥ १ ॥ धमधमन वाग्निनिधनं धाव
मां धपिथनध ॥ अनन्य वाग्निनिधिव रुद्राजम्बूकनृपिणी ॥ २ ॥ न
भासुते महामाय उगर्भ निष्ठा कालिक ॥ मार्गगि कूर्कट प्रोद क
लिकालिन भासुते ॥ ३ ॥ सर्वसिद्धिपदहीन रुयं कनीरुयापह

॥ ११ ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ASHA ANCHINES

I

2178

ST. JOHN'S

॥ प्रदीप्ता रुद्र वद वंशि मम रुद्र कास्य कालिक ॥ ४ ॥ सैसा नगा निधी डथ ड्रुय
सर्व भूतं कनि ॥ विमुक्त विकल च (छु) वासु (छु) म्छु मालिनी ॥ ५ ॥ सहा
नका निधी कूडं सर्व सिद्धिं पयच्छम ॥ दुर्गम किना तिहा वनि प्रताहा
नगा गरुथ ॥ ६ ॥ अन्गुहं कुरु सदा कृपया मी विला कयो ॥ नाश्रु पय
छु विकट विरु मायू ४ सगा न्कीय ॥ ७ ॥ शिवा वलि धन न प्रसन्नारु
वरु नव ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमानम ॥ ८ ॥ नूनि ग्रीम
हा काल संहि नायां शिवा श्चां नै सै माफै ॥

[illegible]

ट॥ लखकायाव दधु धनकतिनावच्छाय॥ वलयाय मालसा ॐ
देऊली साषर प्रक मेग्या अंग सगया॥ ॥ हूं हूं हूं हूं
ह्रीं हूं महाचंद्र या गंधर्वी हूं हूं रुद्र॥ श्री न चिकने ड पापव
यमेग चिनडा नयार्त सकहिनी डिआ॥ ॥ ह्रीं महाचंद्र या गंधर्व
नी शो धों थों रुद्र स्वारा॥ श्री न उपन पविहृतिन प्रयमंग॥



